सूर्य षष्ठी व्रत कथा PDF

एक समय प्रियव्रत नाम का एक राजा था। उनकी पत्नी का नाम मालिनी था। राजा के पास किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी लेकिन वह हमेशा दुखी रहता था क्योंकि उसकी कोई संतान नहीं थी। एक बार राजा ने संतान प्राप्ति के लिए महर्षि कश्यप से यज्ञ करवाया। सफल यज्ञ के कुछ दिन बाद रानी मालिनी गर्भवती हो गयीं। लेकिन नौवें महीने में रानी ने एक मृत पुत्र को जन्म दिया। इस पर राजा बहुत दुखी हुए और उन्होंने आत्महत्या करने का निर्णय लिया।

जैसे ही राजा प्रियव्रत ने आत्महत्या करने की कोशिश की, एक देवी उनके सामने प्रकट हुईं और कहा, "हे राजा, मैं षष्ठी (छठ) देवी हूं।" और मैं लोगों को पुत्रवान और सौभाग्यशाली होने का वरदान देता हूं, लेकिन जो कोई भक्तिभाव से मेरी पूजा करता है। मैंने उनकी सभी इच्छाएं पूरी की हैं।' यदि तुम भी मेरी पूजा करो तो मैं तुम्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दूंगी। इसके बाद देवी अचेत हो गईं।

राजा ने यह बात अपनी रानी को बताई और दोनों भाद्रपद के शुक्लपक्ष की षष्ठी का व्रत करने लगे। कुछ दिनों के बाद रानी मालिनी फिर से गर्भवती हो गईं। और नौवें महीने के बाद रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। तब से लेकर आज तक महिलाएं पुत्र प्राप्ति और उसकी लंबी उम्र की कामना के लिए यह पवित्र व्रत रखती हैं।

pdfinbox.com